© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology

विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में रामायण का वर्णन

डॉ. सुशील उपाध्याय
प्राचार्य,
चमनलाल डिग्री कॉलेज, लण्ढ़ौरा रूड़की, हरिद्वार, भारत।

शशिकला राव
शोधार्थी (हिन्दी), हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग,
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार,भारत।

सारांश– राम का घर अर्थात् रामायण ऐसा ग्रंथ है जो घर–घर में अपना स्थान बना चुका है। लोक सामान्य में चारित्रिक उपमान पुरूषोत्तम, भातृप्रेम के लिए, पितृ आज्ञा के लिए, राजमहल का त्याग करने वाले एक पत्नी धर्म का पालन करने वाले राम की गाथा रामायण का वर्णन विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में यत्र–तत्र देखा जा सकता है। निबन्धकार मिश्र का पारिवारिक परिवेश धार्मिक होने के कारण राममय था। रामायण महाभारत का ज्ञान विद्यानिवास मिश्र को बचपन में ही अपने दादाजी से प्राप्त हो गया था। संस्कारों से मिले रामायण के ज्ञान को निबन्धकार मिश्र ने अपने निबन्धों में वर्णित कर अपने मनोभाव के माध्यम से रामकथा का विवेचन किया है।

मुख्य शब्द – विद्यानिवास मिश्र, निबन्ध,रामायण, संस्कार।

हिन्दू जनमानस के घर–घर में अपनी स्थान बना चुका ग्रंथ रामायण एक ग्रंथ न होकर साधारण जनमानस का विश्वास बन गया है। रामायण ऐसी कृति का रूप ले चुका है जिसमें सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, धारणाओं भारतीयों की धर्म पोथी आचार–विचार, संस्कार, भक्ति भावना, मैत्री, ज्ञान का प्रमाणिक स्रोत है।

रामायण में की एक खास वैशिष्ट्य है कि इसमें घर की बातों को ही विस्तार से कहा गया है। पिता–पुत्र से, भाई–भाई से, पति–पत्नी से, मित्रों से, दासों अनुचरों से किस प्रकार का सम्बन्ध होना चाहिए। इसमें बड़े ही सरल ढंग से समझाया गया है।

लौकिक संस्कृत के प्रणेता आदि कवि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण वर्षों तक मौखिक रूप में जीवन्त रही। ऐसा कहा जाता है कि उसे सर्वप्रथम लव–कुश ने गाकर सुनाया– ''वाल्मीकि द्वारा रामायण काव्य की रचना हो जाने के बाद उसको सर्वप्रथम कुश लव ने गाकर सुनाया और बाद में लोक रूचि की तुष्टि के लिए कुशीलवों ने कंठस्थ कर वर्षों तक उसको मौखिक रूप से जीवित रखा।[1]

रामकथा को लव और कुश द्वारा गाए जाने का वर्णन मिलता है। रामायण को पढ़ने पर ज्ञात होता है कि उसको लिपिबद्ध करने का श्रेय वाल्मीकि को ही है। इतना स्पष्ट रूप से विदित है कि उसकी वाल्मीकि कृत कथा पहले पटल लव–कुश द्वारा गायी।

ऋषीणां च द्विजातीनां साधूना च समागमे।

यशोपदेशं तत्वज्ञौ, जगतुस्तौ समाहितौ।।[2] रामायण, बालकाण्ड 4/13

भारतीय संस्कृति को अपने जीवन में उतारने वाले निबन्धकार के विद्यानिवास के लिए राम कथा अपने आपको ईश्वर से समाज से जोड़ने का सरलतम साधन है। अपने निबन्ध 'रामकथा! मेरे लिए' शीर्षक में लिखते है कि मैं सरवरि अर्थात् सरयूपार का हूँ, इसीलिए राम के ऊपर कुछ अधिक दावा रखता हूँ। मेरे क्षेत्र का कोई गॉव क्या कोई घर नही जहॉ तुलसी की गंध न छायी न हो और उस गंध पर राम भ्रमर बनकर न रीझे हो।..... इस मजदूरों के पास कुछ नहीं था, बस एकाध के पास रामचरित मानस था। सबके पास अयोध्या राम के निर्वासन की कहानी थी। ये मजदूर अपने संस्कारों में बिना किसी आग्रह के, बिना किसी प्रदर्शन के अनगढ़ हिन्दुस्तानी बने रहे, क्योंकि ये राम को किसी भी मूल्य पर छोड़ नही सकते थे और जहॉ राम है, राम की कथा है, वहीं हिन्दुस्तान है, वहीं हिन्दुस्तानियत है।[3]

रामायण की रचना करने वाले महर्षि वाल्मीकि को रामायण लिखने की प्रेरणा देवतुल्य नारद ऋषि से मिली। आदि कवि वाल्मीकि द्वारा जब क्रौंच पक्षी के जोड़े को एक शिकारी द्वारा मार दिए जाने पर व्यथित होकर क्रौंची के करूण रूदन को सुनकर व्यथित हृदय से जो उद्‌गार निकले वहीं उनके प्रेरणा का स्रोत बना।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत् क्रौंचमिथुनादेकमथीः काममोहितम्।[4] रा0वा0 2/15

वाल्मीकि रामायण भारतीय जनमानस के जीवन में नवोन्मेष देता है। वाल्मीकि ने जब नारद से जानकारी पानी चाही कि इस लोक में इस समय कौन गुणवान, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवाक् और दृढ़व्रत है तो उनके मन में ऐसे तेजस्वी लोक विश्रुत, व्यक्ति का चरित्र लिखने का कोई संकल्प नहीं था। नारद ने दुर्लभ गुणों के समुदित प्रतिमान राम का चित्र खींचा जिसमें आकृति और आचरण, विद्या और पराक्रम, लोक और स्व सभी समंजस थे। ..... उनमें मानवीय गुणों का सांक्ल्य होते हुए भी वे शिखर मात्र नहीं थे वे सर्व के साथ राम थे।

तपः स्वाध्याय निरत्रं तपस्वी वाग्विदां वरम्।

नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकि मुनिपुंगोवम्।।

कोन्वरिमन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।

धर्मज्ञश्च, कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढब्रतः।।

चरित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।

विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकः प्रियदर्शनः

आत्मावान् को जित क्रोधो द्युतिमान को S नसूचकः।

कस्य विभ्यति देवाश्च जात रोषस्य संयुगे।।[5]

रामायण के नायक राम एक साधारण पुरूष न होकर अपने कर्मो द्वारा आदर्श पुत्र, आदरप्राप्त भ्राता, प्रिय पति, सम्मानीय राजा का आदर्श बनते है। राम की व्यापकता स्थान काल से परे है। राम में जीवन लगाने वाले की बुद्धि

राग द्वेष जाति पाति से ऊपर उठ जाती है। मिश्र जी अपने निबन्ध, ओझल होती भारत की पहचान में लिखते हैं कि –

सो सब धर्म कर्म जरि जाऊ।
जिहि न राम पद पंकज भाऊ।।
जाति पांति धनु धरमु बड़ाई।।
सब तजि रहे तुम्हहि लौं लाई।।

.... राम मं ध्यान का अर्थ चुपचाप माला जपना नहीं है, पूरे जीवन को देखना है।

राम के निवास का स्थल बतलाता है कि जाति–पॉति, धन, धर्म, बड़ाई सब छोड़कर जो तुम्हारे में लौ लगाए नहीं तुम रहो। जो व्यक्ति धर्म से चिपका रहे, जाति से चिपका रहे, वहॉ तुम मत रहो तुम्हारे लिए वहॉ जगह नहीं है। वहॉ रहो, जहॉ इस सबको छोड़कर केवल तुम में ध्यान रहता है। तुम में ध्यान का अर्थ होता है, सबमें ध्यान, सबके दुःख का ध्यान , छोटे से छोटे प्राणी के दुःख का ध्यान, उसकी आवश्यकता का ध्यान, राम में ध्यान का अर्थ एक मूर्त स्परूप ले लेता है। राम में ध्यान का अर्थ चुपचाप माला जपना नहीं है पूरे जीवन को देखना है।''[6]

वाल्मीकि के राम पुरूषोत्तम है उनमें साधारण मनुष्य जैसे अवगुण काम क्रोध मोह नही है वह अपनी प्रजा को अपने परिवार के समान मानकर साथ लेकर चलने वाले हैं। निबन्धकार ने राम के चरित्र के इन्हीं गुणों को अपनी रचना में वर्णन करते हुए तुलसी कृत रामचरित मानस के दोहों का उदाहरण दिया है–

काम कोह मद मान न मोहा
लोभ न छोभ न राम न द्रोहा
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया
कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी
जाति–पाति धन धरम बड़ाई
प्रिय परिवार सदनु सुखदाई
सब तजि तुम्हहिं रहइ लौ लाई।''[7]

निबन्धकार मिश्र के लिए राम कथा भयंकर से भयंकर कष्ट को दूर करने का एक सरल मार्ग है। चाहे वह कहर शारीरिक हो या मानसिक। उन्हीं के शब्दों में राम वन गमन के सन्दर्भ में लिखी गयी पंक्तिया है– ''रामचरित मानस एक साथ मैने भयंकर पीड़ा के क्षणों में पढ़ा था। मेरे ऊपर तो औचक हुआ फेकने वाला लड़का तो भागा, पर मैने देखा ही नहीं, क्या हो रहा है और मुॅह–हाथ–पैर रखी सूज गए। घर लाद कर लाया गया। होश आया तो भयंकर पीड़ा। .....तभी मैंने तभी रामचरितमानस का पारायण किया लगभग ढाई दिनों में मेरा दर्द जाने कहॉ चला गया और तभी एक दूसरा दर्द समा गया। वह दर्द में विशेष रूप से बॉटने जा रहा हूॅ। सुमन्त गंगा तीर तक पहुॅचा कर लौट

रहे हैं, इस बीच निषादराज गुह भी कुछ दूर राम के साथ जाकर लौटे है और निषाद को लगा कि ये तो यहीं प्राण दे देगें। उन्हें रथ पर बिठलाता है, अब घोड़े नही चलते :–

शोक शिथिल रथ एकहिं न हॉकी।
रघुवर विरह पीर उर बाकी।
तरफराहिं मृग चलहिं न घोरे।
वनमृग मनहु आनि रथ जोरे।.....
शोच सुमन्त विकल दुःख दीना
धिक जीवन रघुवीर विहीना
रहहिं न अन्तर अधम सरीरू।
जसु न लहेउ विछुरत रघुवीरू।[8]

रामायण की कथा सर्वप्रथम वाल्मीकि द्वारा लिपिबद्ध की गई। रामायण की प्रसिद्धि का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यह ग्रंथ लगभग सभी भारतीय और विदेशी भाषाओं में उपलब्ध है और विभिन्न विद्वानों द्वारा इसकी कथा को आधार बनाकर अनेक ग्रंथों की रचना की गई है। सर्वाधिक प्रसिद्धि संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि रामायण हिन्दी में तुलसी कृत रामचरित मानस है। वाल्मीकि ने अपने ग्रंथ का नाम रामायण ही क्यों रखा? इसी का अनुकरण करके प्रायः विद्वानों ने अलग–अलग भाषाओं में लिखने के पश्चात भी राम का चरित्र हिमालय सूर्य से भी तेज युक्त, अत्यन्त वीर, अति सुन्दर रूपवान होकर भी अभिमानी न होकर हिमालय जैसे धैर्यवान है। निबन्धकार मिश्र ने उनके धैर्यगुण का वर्णन करते हुए लिखा है– भारतीय साहित्य में जहॉ कहीं विभिन्न गुणों के लिए उपमान ढूँढ़े गये हैं वहॉ गम्भीरता के लिए समुद्र और धैर्य के लिए हिमवान उपमान के रूप ने बार–बार दोहराये गये हैं। वाल्मीकि रामायण में राम का वर्णन करते समय कवि ने कहा है :

स च सर्वगुणोपेतः कौशल्यानन्दवर्धना।
समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव।।[9]

वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण की कथा संक्षेप में यह है कि इच्छवांकु नरेश राजा दशरथ के पुत्र अपने पिता की आज्ञा और उनके दिए गए वचन को पूरा करने के लिए अपने अनुज लक्ष्मण और पत्नी सहधर्मिणी सीता के साथ चौदह वर्ष के वनवास के लिए राजमहल का त्याग कर देते है।

वनवास के समय राम को अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। सीता का अपहरण लंका नरेश रावण द्वारा अपनी बहन सूर्पनखा के अपमान का बदला लेने के लिए कर लिया जाता है। ईश्वरीय रूप राम सीता के वियोग में वन–वन भटकते हए प्रलाप करने लगते है–

''दूसरी ओर वही राम सीता के शोक में उन्मन्त होकर एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष के पास दौड़ते हुए पुछने लगे, कहो कदम्ब तुम्हारे पुण्य सीता को बड़े अच्छे लगते थे, तुम्हें पता है सीता कहॉ है..... कुटज तुमने सीता को देखा है उसके ऊपर तुम्हारे तने की तरह है, अशोक तुम शोक दूर करने वाले हो तुम सीता का पता क्यों नही बताते–

अस्ति कच्चित्वया दृष्टा सा कदम्बप्रिया प्रिया।
कदम्ब यदि जानीषे शंख सीतां शुभाननाम्।।
दिनाधपल्लवसंकाशां पीतं कोशेषवासिनाम्।
शसस्व यदि सा दृष्टि दृष्टा विल्व विल्पोयमस्तनी।।
कुकुभः ककुभोरूं तां व्यक्तं जानाति मैथिलीम्।
लतापल्लवपुष्पाढयो भाति होष बनस्पतिः।।[10] अ0 6/12–13–15

अपने ग्रंथ का नाम रामायण ही रखा यथा– कम्ब रामायण, कृतिवास लगभग आदि। इसी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए मिश्र जी लिखते है कि– ''रामकथा पर आधारित वाल्मीकि के ग्रंथ का नाम 'रामायण' देने का कारण क्या है इस पर विचार–विमर्श करना चाहिए। अयन के दो अर्थ है 'घर' भी है, और 'चलना' भी है। राम के घर के बारे में तुलसी दास जी ने के प्रसंग में कहा है कि वन में पहुॅचने पर चित्रकूट वनमाला के द्वार पर वाल्मीकि मिले। उनसे राम ने पूछा कि मैं कहॉ घर बनाऊॅ? वाल्मीकि ने उत्तर दिया कि कोई जगह तो नहीं है जहॉ तुम नही हो–

पूॅछेतु मोहि कि रहौं कहॅ मैं पूछत सॅकुपाउॅ।
जहॅ न होहु तह देतु कहि तुम्हहि देखावॉ ठाउॅ।।[11]

वाल्मीकि उत्तर देते हुए कहते है कि जो मनुष्य जाति, धर्म, धन सबको त्याग कर केवल तुम्हारा ध्यान करने वाला हो ऐसे व्यक्ति का हृदय ही तुम्हारा निवास स्थल हो–

जॉति, पाति धनु धरम बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई।
सब तीज तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयॅ रहहु रघुराई।। रा0म0 अयोध्या काण्ड

राम एक पात्र न होकर एक चरित्र है जो मानव मात्र के लिए जीवन जीने का सरल मार्ग दिखाते है। रामायण के राम दैवीय गुणों से युक्त होकर भी मानवीय गुण धर्म से ओत–प्रोत है। वाल्मीकि ने यत्र–तत्र अपनी रामायण में इसका सहज एवं सटीक वर्णन किया है। राम जब वन में होते है तो उन्हें स्वयं से अधिक अपने अनुज भरत की चिन्ता सताती है कि वह किस प्रकार से रह रहे होंगे।

सबसे अधिक हेमन्ती वनवास की पहचान राम की इसी चिन्ता से होती है। इस ठंड में भरत कैसे नंदिग्राम में रह रहे है। राज्य का सब सुख–भोग छोड़कर वे तपस्या करते हुए एक बार मुट्ठी भर कुछ खाकर ठंडी–ठंडी जमीन पर सो रहे होंगे। इस वनवास में राम को अपनी चिन्ता नही होती, मैं अपने छोटे भाई भरत की चिन्ता होती है। यही वन की संस्कृति है और इस संस्कृति का काव्य है– 'रामायण'।

''अस्मिंस्तु पुरूष व्याघ्र काले दुखसमन्वितः।
त्पश्चांरति धर्मात्मा त्वद्भक्त्या भरतः पुरे।।
त्पक्त्वा राज्यं च मानं च भोगाश्च विविधान् बहून।
तपस्वी नियताहारः शेते शीते महीतले।।
सोडपि वेलानिमां नूनमभिषेकार्थनुद्यतः।

वृतः प्रकृतिभिर्नित्यं प्रपाति सरयू नदीम।।
अत्यन्त सुखसंवृद्ध सुकुमारो हिमर्दितः।
कंथम् त्वपररातेषु सरयूमवृमाहते।।[12]

रामायण को केवल एक ही पात्र नही वरन् सभी पात्र कोई न कोई शिक्षा प्रदान करता है। राम की पत्नी सीता स्वयं में एक ऐसा चरित्र है जिसमें सतीत्व, वीरता, त्याग आदि अनेक मानवीय गुणों का भण्डार है। स्त्री होने पर भी वह कमजोर लाचार नही है। राम से दूर रहने पर वह राम के वियोग पर अपार शोक में रही, किन्तु वही राम जब सीता को चरित्र पर लाक्षन लगाकर त्याग करते है तो वह उन्हें भी फटकारती है–

वे राम के लिए बिलखती रहती हैं परन्तु जब उन्हें राम अस्वीकार करते है, तो उन्हें भी फटकार सुनाती है– ''तुमने मेरा तिरस्कार नहीं किया तुमने छोटे आदमी की तरह नारीत्व का तिरस्कार किया है, तुमने अपने बचपन में जो पाणिग्रहण किया था, उसको अप्रमाणित कर दिया है, मेरी भक्ति मेरा शील सब तुमने अनदेखा कर दिया है।

त्वया तु नृपशार्दूल रोषमेवानुवर्त्तितः।
लघुनेन मनुष्येण स्त्रीत्वमेव पुरस्कृतम्।। रा0यु0 117/14
न प्रमाणीकृतः पाणिः वाल्ये मन निपीडितः।
मन भक्तिश्च शीचं च सर्व ते पृष्ठतः कृतम्।।[13] तदैव 16

सीता के शील सौन्दर्य को वाल्मीकि ने जिस तन्मन्यता से उजागर किया है उतना शायद ही किसी अन्य कवियों ने किया है। सीता की तपस्या कठिन साधना, आत्म त्याग ने उन्हें राम के व्यक्तित्व से तनिक भी मन्द नही पड़ा है। विद्या निवास मिश्र अपने निबन्ध 'सखा धर्मनय अथ रथ जाके' में सीता के चरित्र का वर्णन करते हुए लिखते है कि – सीता की इस ज्वाला का ताप वाल्मीकि ने और भवभूति ने दिया है। तुलसी दास इस ताप की ऑच सह नहीं सके, वे केवल अपने राम से इतना ही कहला के चुप रह गये कि–

प्रेम तत्त्व कर मम अरू तोरा।
जानत प्रिया एक मन मोरा।।
तो मन रहहिं सदा तब पाहीं।
जानि प्रीतिरस एतनेहि माहीं।।[14]

सीता संकल्प से उनके चरित्र को और महान बनाता है। राम की लोकप्रियता में जनक नंदिनी के त्याग तपस्या का भी उतना ही योगदान है जितना स्चयं राम का। इसलिए तो विद्या निवास मिश्र ने लिखा है–

''सीता निष्पाप है। तपोवन की कन्या को कोई दोष छू नहीं सकता, लग नही सकता। उसे पराजित नहीं किया जा सकता। इसी कारण 'रामायण' जितना रामचरित है उससे कहीं अधिक 'सीतायाश्चरितं महत' है। वन राम का घर है, क्योंकि वन ही सीता है। रामायण का मर्म समझने के लिए वन की इस पृष्ठभूमि के भीतर झॉकने की जरूरत है।

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के माध्यम से भारतीय सभ्यता संस्कृति की मर्यादा को प्रतिष्ठापित किया है। रामायण की कथा से जुड़े अनेक मिथक लोक कथाओं में विद्यमान है। उन्हीं में से एक कथा का जिक्र करते हुए निबन्धकार मिश्र लिखते है–

''वात्सायन जी ने मुझे बतलाया कि गुजरात की एक लोक कथा है। राम ने सोचा कि पत्थर पर मेरा नाम वानरों ने लिखा, समुद्र में फेका, वह तैरने लगा। मैं खुद पत्थर फेंककर देखूँ, पत्थर फेंका वह डूब गया। हनुमान वहीं थे राम को बड़ा दुखी देखा, पूछा, प्रभु क्यों दुखी हैं। राम ने बतलाया मैंने परीक्षा ली, सब झूठ है, मेरे नाम पर कुछ हो सकता है यह गलत है। हनुमान बोले– 'प्रभु आपने ठीक नहीं किया, आप प्रेम की विश्वास की परीक्षा क्यों लेते हो? सीता के प्रेम की परीक्षा लेकर क्या आपको पछतावा नही हुआ? और दूसरी बात यह है कि आप सोचिए आपने अपने हाथ में जिस पत्थर को लिया, वह निहाल हो गया कि राम के हाथ स्पर्श मिला, वह आकाश में उड़ने लगा और आपने उसी हाथ से उसे पानी में फेंका, भला वह ग्लानि में डूबेगा नही ंतो ऊपर आयेगा?[15]

रामायण की कथा मानव को जीवन के आदर्शो को जीने के लिए प्रेरित करता है। उसे मार्ग दर्शन प्रदान करता है कि वही सही रास्ते का चयन करके किस प्रकार अपने जीवन को आनंदपूर्ण बना सकता है तथा दूसरे लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन सके।

रामायण के विषय में देवदत्त पटनायक का कथन है कि– ''रामायण इंसानी हालात के बारे में चिन्तन करती है, किस तरह नियति और वासना मिलकर इस संसार का अनित्य और त्रासद बना देते है। यह हमें दिखाते हुए कि जिम्मेदार आचरण के माध्यम से किस प्रकार आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण जीवन जिया जा सकता है, इसका समाधान भी प्रस्तुत करती है।''[16]

राम कथा अनेक भाषाओं में लिखी गयी है। इसकी प्रसिद्धि इसकी महत्ता इसी से पता चलती है। वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस दोनों राम की कथा का वर्णन है। वाल्मीकि रामाण से ही प्रेरणा लेकर तुलसीदास ने रामचरित मानस लिखी। लेकिन दोनों रचनाकारों के रामकथा लिखने का ध्यये अलग था। विद्या निवास मिश्र ने इस ध्येय को स्पष्ट करते हुए लिखा है – उन्होंने वाल्मीकि रामायण और मानस के केन्द्रों को स्पष्ट किया है। वाल्मीकि रामायण में यदि क्रौंच वध का विक्षोभ केन्द्र में है तो रामायण में राम और सीता का यश है। वाल्मीकि रामायण में यदि व्यष्टि के सामंजस्यपूर्ण आचरण पर जोर है तो रामचरित मानस में व्यक्ति का ही निर्विषयीकरण है और इसीलिए वह मांग करते हैं कि–

अस मानस मानस चख चाहीं।[17]

रामायण केवल राम के आदर्श और सीता के त्याग की कथा नही वरन् यह प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्त्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा देने वाला ग्रंथ है। व्यक्ति को अपनी मां और जन्मभूमि का हमेशा सम्मान करना चाहिए। निबन्धकार मिश्र लिखते है कि– ''श्रीरामचन्द्र जी जब लंका विजय करके विभीषण का राज तिलक करके स्वदेश लौटते है उस समय विभीषण उन्हें लंका में ठहरने के लिए कहते है। लक्ष्मण लंका सोने की ही क्यों न हो? मुझे नही रूचि ही। जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से गौरवशाली है।''

'अपि स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।[39]

राम चरित्र साधारण होकर भी असाधारण व्यक्तित्व वाला है। वह पहले मनुष्य है देवत्व धारण करते है अपने कर्मों द्वारा। लेखक का राम के प्रति आकर्षण इतना अधिक है कि अपने निबन्धों में यत्र–तत्र–सर्वत्र राम का स्मरण किया है। आज के सन्दर्भ में निबन्धकार का कथन है कि – ''कितने कितने भाग्यशाली हैं वे जो राम से जुड़े हुए हैं। कितना अभागा हूँ मैं और मेरी ही तरह अर्धशिक्षित साक्षर समुदाय जो राम को उपस्थिति के रूप में नहीं देख पाता जमीन की खुदाई करके पुराने ठीकरों में राम का अस्तित्व तलाशता रहता है, राम को अपने पुलक में नहीं देख पाता, राम को अपने अश्रु में झलकते नही देख पाता।[18]

श्रीराम के रूप का चिन्तन करने से मन में सात्विकता का संचार होने लगता है। असुर भी सुर जैसा व्यवहार करने लगते हैं। ऐसा ही एक प्रसंग रामायण में आता है। जब रावण का अनुज कुम्भकर्ण उसे अपने मायावीं शक्तियों द्वारा सीता को भ्रम में डालने के लिए कहता है– मद की मादकता में धुत कुम्भकर्ण बोला, अरे राक्षस राज! तुम तो मायावी हो एक बार राम का रूप रखकर चले जाते। काम बन जाता। रावण बोला ' अरे मित्र! सखे! मैंने यह भी विचार किया था। किन्तु राम का रूप धारण करने के लिये जैसे ही मैं रामरूप का ध्यान करता हूँ कि मेरे मन की समस्त कलुषित भावना नष्ट हो जाती है। मैं प्रत्येक सभी में अपनी माता के दर्शन करने लगता हूँ। स्वयं से लज्जित होकर बैठ जाता हूँ–कहकर रावण मौन हो गया।[19]

रामायण रामचरित काव्य नही वरन् अपने जीवन मूल्यों को जीवन के अन्तिम क्षण तक बनाये रखने की कथा है। किस प्रकार से दशरथ, राम, भरत, सीता, लक्ष्मण, रावण, विभीषण तथा हनुमान अपने–अपने जीवन के आदर्श मूल्यों को बनाए रखने के लिए अपने प्रिय से प्रिय का त्याग करने में सकुचाते नही है।

राम का सम्पूर्ण जीवन ही मानवीय मूल्यों की स्थापना में व्यतीत हो जाता है। यह एक योग्य पुत्र, भाइयों के स्नेही, जन साधारण के आदर्श सीता के त्याग की मूर्ति है। राम केवल एक पात्र नही आदर्श जिससे वह मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाए। राम अपने सत्कर्मों के कारण ही चरित्र नायक, आदर सम्मान और पूजनीय हो गये। वर्तमान में भी राम एक ऐसा आदर्श है जिसे प्रत्येक हिन्दू प्राप्त करना चाहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास : वाचस्पति गैरौला, पृ0सं0– 173
2. वही पृष्ठ
3. रामकथा मेरे लिए : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0– 25
4. शेफाली झर रही है : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0– 50
5. वही पुस्तक, पृ0सं0 49
6. क्या पूरब क्या पश्चिम : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0– 37–38
7. रामचरित मानस अयोध्या काण्ड : तुलसीदास पृ0सं0– 131

8. रामकथा मेरे लिए (संचारिणी) : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0– 26
9. शेफाली झर रही है (काव्य बीज) : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0– 56
10. व्यक्ति व्यंजना (हिमालय) : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0–85
11. संचयिता राम का अयन वन : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0–88
12. वही पुस्तक पृ0सं0–192
13. छितवन की छॉह : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0–88
14. रामचरितमानस सुन्दरकाण्ड : तुलसीदास, पृ0सं0– 377
15. संचारिणी रामकथा मेरे लिए : विद्यानिवास मिश्र पृ0सं0–27
16. राम की गाथा : देवदत्त पटनायक, पृ0सं0–16
17. रस पुरूष : विद्यानिवास मिश्र, नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, पृ0सं0–124
18. तमाल के झरोखे से : विद्यानिवास मिश्र, पृ0सं0–27
19. संचारिणी, रामकथा मेरे लिए : विद्यानिवास मिश्र, पृ0सं0–29